KHAN G.S. RESEARCH CENTER
Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6
Mob. : 8877918018, 8757354880
Time : 07 to 08am
By : Khan Sir
(मानचित्र विशेषज्ञ)

दक्षिण भारत

वाकाटक वंश

- सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।
- इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
- ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे। (ये शैव सम्प्रदाय के थे।)
- इस वंश के संस्थापक विंध्य शक्ति (255 ई०) में किया था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन प्रथम थे। इन्होंने 4 अश्वमेघ यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ कराया।
- इस वंश के शासक रूद्रसेन का विवाह प्रभावति से हुआ।
- प्रभावति, चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
- इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
- वाकाटक वंश का अंतिम शासक पृथ्वी सेन द्वितीय था।
- वाकाटक की शक्ति धीर-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालूक्य वंश का उदय हो गया।

चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

- सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी–
  (i) वातापी/बादामी
  (ii) कल्याणी
  (iii) बेंगी

चालुक्य (वातापी/बादामी) :-

- वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।
- इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे। जिसके बारे में जानकारी कैरा ताम्रपत्र अभिलेख से प्राप्त होता है।
- इसने सामंत के रूप में शासन किया। क्योंकि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे।
- इन्होंने वातापी (कर्नाटक) को अपनी राजधानी बनाया।
- पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी और महान शासक था। जिसके बारे में जानकारी एहोल अभिलेख से मिलती है।
- इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोंड की उपाधि धारण कर लिया।
- पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीतकर वातापीकोंड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशिन-II की हत्या कर दी।
- इसके अतिरिक्त इन्होंने वातापी में स्थित मल्लिकार्जुन मंदिर के दीवार पर अपना एक अभिलेख खुदवाया।
- पुलकेशिन-II के दरबार में 641 ई. में चीनी यात्री ह्वेनसांग आया था।
- पुलकेशिन-II ने ईरान के राज खुसरो-II के बरबार में अपना एक दूत मंडल भेजा था।
- पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ति था।
- किन्तु चालुक्यों के अंदर बदले की भावना थी। ये राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का इंतजार कर रहे थे ताकि राष्ट्रकूट का अंत किया जा सके।
- पुलकेशिन-II के बाद अगला शासक विक्रदित्य बना। इन्होंने पल्लव की राजधानी काँची पर अधिकार करके अपने पिता के पराजय कर बदला लिया किन्तु अपने शासन के अंतिम समय में पल्लव शासक परमेश्वरवर्मन से पराजय हो गया।
- विक्रदित्य प्रथम के बाद चालुक्य वंश का अगला शासक विनयादित्य बना। इसके समय चालुक्य वंश का सर्वाधिक विकास हुआ। इन्होंने सकलेत्तरपरथनाथ की उपाधि धारण की। जिसका अर्थ होता है। संघर्ष पर विराम लगाने वाला।
- विनयादिजय के मृत्यु के बाद अगला शासक विजयादित्य बना। इन्होंनें पट्टदक्कल (बीजापुर, कर्नाटक) में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- पट्टदक्कल शिव मंदिर को विजेश्वर शिव मंदिर के नाम से जाना जाता है।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- विजयादित्य के बाद इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-II बना। इन्होंने पल्लव राज्य पर आक्रमण करके उसके राजधानी करांची पर अधिकार करके कांचीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और साथ ही कांची में स्थित राजसिंहेश्वर मंदिर के दिवार पर एक अभिलेख खुदवाया।
- विक्रयदित्य द्वितीय की दो पत्नीयाँ थी। पहली पत्नी लोकमहादेवी हैं पट्टदक्कल में लोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाई। इस मंदिर को विरूपाक्ष मंदिर के नाम से जाना जाता है।
- दूसरी पत्नी त्रिलोकीमहादेवी थी इन्होंने पट्टदक्कल में त्रिलोकेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक कृर्तिवर्मन-II था।
- किर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।

कल्याणी का चालुक्य :-

- चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- इस वंश को पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है।
- कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक तैलप–II था। इसकी राजधानी मानखेट थी।
- इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने अपनी राजधानी मान्नखेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- सोमेश्वर प्रथम ने अपने जीवनकाल में केवल चोलों पर विजय हासिल नहीं कर पाया और चोल शासक राजेन्द्र चोल से हारकर सोमेश्वर प्रथम ने करूवती के पास तुंगभद्रा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- इन्होंने विक्रमांकदेव चरित नामक पुस्तक लिखी।
- इसके दरबार में मिताक्षर विज्ञानेश्वर रहते थे। जिन्होंने मिताक्षरा नामक पुस्तक लिखी। जिसका संबंध हिन्दू कानून से था।
- इस वंश का राजचिन्ह् वाराह (शूअर) था।
- इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर–IV थे।

बेंगी का चालुक्य :-

- यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- इस वंश की राजधानी बेंगी (आंध्रप्रदेश) थी।
- इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

पल्लव वंश

- इस वंश की राजधानी कांची थी।
- यह दक्षिण भारत में कृष्णा और गोदावरी नदियों के बीच का प्रदेश था।
- इस वंश की प्रथम जानकारी हरिसेन की प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग की यात्रा से मिलती है।
- इसका प्रारंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में एवं बाद में संस्कृत भाषा में मिले है।
- इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- सिंह विष्णु को अवनि सिंह भी कहा जाता है।
- इसके दरबार में भारवि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने किरातुलजुकियम नामक पुस्तक लिखी है।
- इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- पुडुकोट्टई की तिरूकोकर्णम्, कोकर्णेश्वर मंदिर और पल्लवारम् की पाँच शेल वाले गुफा मंदिर का निर्माण महेन्द्र वर्मन–I द्वारा कराया गया था।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुनः पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- इसके दरबार में दण्डी नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दासकुमार चरितम् नामक पुस्तक संस्कृत भाषा में लिखी।
- इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।
- 8वीं सदी के इस पल्लव वंश में शैव धर्म अधिक प्रचलित था।
- महेन्द्र वर्मन संगीत प्रेमी था।
- इसने कद्राचार्य को संगीत की शिक्षा दी थी।
- नरसिंहवर्मन-I ने महाबलीपुरम में एकश्मीय मंदिर बनवाया जिसे रथ मंदिर कहते हैं।
- नरसिंहवर्मन-I के दरबार में ह्वेनसांग आया था।
- नरसिंहवर्मन-II ने कांची में कैलाश मंदिर, सप्तपैगोडा के शोर मंदिर और महाबलीपुरम् का मंदिर बनवाया।
- इसी के समय भारत में अरब आक्रमण प्रारंभ हो गए।
- इस वंश में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र कांची था।
- महाबलीपुरम् के सात पैगोडा इसी वंश द्वारा स्थापित किया गया था।

By : Khan sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

चोल वंश (9वीं सदी) तंजौर

- चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- इन्होंने अपनी राजधानी तंजौर/तंजावुर को बनाया।
- 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं। इन्होंने नर केसरी की उपाधि धारण की थी।
- इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया। इन्होंने कोदंडराम की उपाधि धारण किया था।
- चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदूरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- इसकी जानकारी उतरमेरूर अभिलेख से मिलती है।
- परान्तक-I प्रथम चोल शासक था। जिसने भूमि सर्वेक्षण करवाया था।
- परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कृष्ण-III ने तक्कोलम् के युद्ध में पराजित कर दिया।
- चोल वंश का अगला शासक राजाराज बना। इनका मूल नाम अरिमोलीवर्मन था।
- इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली। किन्तु इन्होंने श्रीलंका को चोल साम्राज्य में शामिल नहीं किया।
- इसने अपनी राजधानी तंजौर में ''वृहदेश्वर'' मंदिर का निर्माण करवाया। ये शैव धर्म को मानते थे। इसने शिवपाद शेखर की उपाधि धारण किया।
- राजाराज अपने अंतिम दिनों में मालदीव पर भी अधिकार कर लिया और एक दूत मंडल को चीन भेजा।
- अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया और गंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया तथा अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया। राजेन्द्र प्रथम अरब सागर में स्थित सदीमन्तिक नामक द्विप पर भी अधिकार कर लिया।
- राजेन्द्र प्रथम चोल वंश का पहला शासक था जिसने 72 सदस्यीय दूत मंडल चीन भेजा था।
- इसी वंश के शासक कोलोतुंग द्वितीय था। जिसने चिदम्बरम् मंदिर में स्थापित गोविंदराज (विष्णु) की मूर्ति को मंदिर से हटवाकर समुद्र में फेंकवा दिया था। जिसे रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकलवाकर तिरुपति मंदिर में स्थापित करवाया।
- इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- चोल काल की स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- चोल प्रशासन में महत्वपूर्ण पद राजा का होता था। राजा को सहायता देने के लिए मंत्रिपरिषद् होती थी।
- चोल प्रशासन में भाग लेने वाले उच्च श्रेणी के अधिकारी को पेरून्दनम् तथा निम्न श्रेणी के अधिकारी को शेरून्दनम् कहा जाता था।
- इस समय राजा का उच्च अधिकारी को उड्डनकुट्टम कहा जाता था।
- इस समय अधिकारियों को वेतन न देकर भूमि अनुदान के रूप में दिया जाता था। इस समय प्रशासन की सुविधा के लिए पूरे चोल साम्राज्य को छ: प्रांतों में बांटा गया था। उस प्रांत को मंडलम् कहा जाता था।
- प्रांत या मंडलम् को कोट्टम(कमीश्नरी) में, कोट्टम को नाडू (जिला) में बांटा गया था।
- नाडू (जिला) को कई कुर्रम (ग्राम समूह) में बांटा गया था।
- चोल काल में आय का मुख्य स्रोत भू-राजस्व था।
- चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- द्रविड़ शैली को विमानम् शैली भी कहते हैं।
- विमानम् शैली का प्रथम उपयोग तंजौर के वृहदेश्वर मंदिर में किया गया।
- चोल काल में निर्मित नटराज प्रतिमा सांस्कृतिक धरोहर था।
- चाल काल के तमिल भाषा का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- तमिल साहित्य के त्रिरत्न के रूप में कंबन, ओट्टककुट्टन एवं पुगालेन्दी थे।
- कंबन ने तमिल रामायण की रचना किए।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक किर्तिवर्मन-II को हराकर राष्ट्रकूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेत (मालखण्ड) को बनाया।
- दंतिदुर्ग ने महाधिराज, परमेश्वर और परम्भट्टारक उपाधियाँ धारण की।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-I था। जिसने महाराष्ट्र में एलोरा के कैलाश मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- इस वंश का अगला शासक अमोघवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसके कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी। इसने जीनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।
- इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- शांतिपुराण की रचना पोन्न द्वारा किया गया था।
- इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- इस वंश का अगला शासक कृष्ण-III बना। इसने तक्कोलम के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित कर दिया।
- इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुन: स्थापना कर दी।
- तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

पाल वंश (7वीं-11वीं)

- पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा के अनुयायी थे।
- पाल वंश बिहार-बंगाल के क्षेत्र में था।
- पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- पाल वंश के संस्थापक गोपाल थे।
- उन्होंने बिहारशरीफ (नालंदा) में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- पाल वंश का अगला शासक धर्मपाल था।
- इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रूका।
- धर्मपाल ने भागलपुर (बिहार) में विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
- उत्तरापथ स्वामी का उपाधि धर्मपाल ने धारण किया और इस उपाधि से गुजराती कवि सोट्ठल ने संबोधित किया था।
- अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरबयात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रूहमा शब्द से संबोधित किया था।
- इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
- महिपाल ने पाल वंश का विकास पुन: प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- इसने आति दिपंकर नामक बौद्ध भिक्षुक के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में ब्रजयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
- पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया।
- पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

सेन वंश

- इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे।
- इस वंश का अगला शासक विजय सेन था।
- सेन वंश की राजधानी लखनौती (नदिया), बंगाल में थीं।
- विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- विजयसेन शैव धर्म का अनुयायी था।
- विजयसेन ने अपनी दो राजधानी बनायी थी। 1 विजयपुर जो पश्चिम बंगाल में था। दूसरी राजधानी विक्रमपुर जो पूर्वी बंगाल में था। यह वर्तमान में बांग्लादेश में स्थित है।
- विजयसेन ने परमेश्वर, परमभट्टारक और महाधिराज की उपाधियाँ धारण की थी।
- विजयसेन का उत्तराधिकारी वल्लाल सेन था।
- वल्लाल सेन विद्वान तथा समाज सुधारक था।
- दानसागर एवं अद्‌भुत सागर ग्रंथ की रचना वल्लाल सेन ने की थी।
- अद्‌भुत सागर की रचना के दौरान ही इनकी मृत्यु हो गई जिसकी वजह से लक्ष्मण सेन इसको पूरा किया था।
- इनके दरबार में जयदेव रहते थे।
- जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- परमभागवत् की उपाधि लक्ष्मण सेन ने धारण की थी।
- लक्ष्मणसेन सेन वंश का प्रथम शासक था जिसने अपना अभिलेख हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया था। इससे पहले अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखा जाता था।

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहार वंश की उत्पत्ति गुजरात व दक्षिण-पश्चिम राजस्थान में हुई थी।
- प्रतिहारों के अभिलेख में इन्हें श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है।
- पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख मिलता है।
- इस वंश के संस्थापक नागभट्ट-I थे।
- नागभट्ट–I ने मालबा के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया था।
- इस वंश का दूसरा सबसे प्रभावशाली शासक वत्सराज था और इसी के समय कन्नौज के लिए त्रिस्तरीय संघर्ष में भाग लिया और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- इस वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दीं।
- मिहिरभोज के उपलब्धियों की चर्चा उसके ग्वालियर प्रशस्ती अभिलेख में की गई है।
- मिहिरभोज ने गुर्जरों की शक्ति पराकाष्ठा पर पहुँचा दी थी।
- मिहिरभोज के पश्चात् उसका पुत्र महेन्द्रपाल शासक बना। इन्होंने राष्ट्रकूट शासक इंद्र तृतीय को पराजित किया।
- महेन्द्रपाल के दरबार में प्रसिद्ध विद्वान राजशेखर रहते थे। जिन्होंने कर्पूरीमंजरि, काव्यमीमांसा, बालरामायण आदि ग्रंथों की रचना किए।
- स्कंद पुराण में इस वंश को गुर्जर कहा गया।
- इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।

चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जेजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है। चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली (द्रविड़ शैली + नागर शैली) को जन्म दिया।
- बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी है।
- प्रारंभ में इसकी राजधानी कालिंजर (महोबा) थी। किन्तु बाद में इसे खजूराहो स्थानांतरित किया गया।
- इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- इस वंश का अगला शासक "धंग" था। यह शिव को मानता था।
- इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- इसे कंदरिया महादेव के नाम से भी जाना जाता है।
- इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की प्रतिमा है।
- राजा धंग ने जिन्नाथ, विश्वनाथ और वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक राज्यपाल की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर से भाग गया।
- विद्याधर अकेला ऐसा भारतीय शासक था जिसने महमूद गजनवी की महत्वकांक्षाओं का सफलतापूर्वक विरोध किया।
- इस वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव था, जिसे पृथ्वीराज चौहान-III ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।
- आल्हा रूदल दोनों भाई परमर्दिदेव का सेनापति था जो पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते समय उनकी मृत्यु हो गई।
- परमर्दिदेव ने कुतुबद्दीन ऐबक की अधिनता स्वीकार कर ली जिसके कारण उसके मंत्री अजयदेव ने उनकी हत्या कर दी थी।
- अंतत: कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

कुछ छोटे राजवंश

1. मैत्रक वंश :

- इसके संस्थापक भट्टारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था।
- इसकी राजधानी वल्लभ थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।
- ये गुप्तों के सामंत थे।

2. कल्चूरी वंश : (चेदी वंश)

- यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था।
- इस वंश के संस्थापक कोक्कल-I थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी त्रिपुरी को बनाया।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
- इन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया।

3. गौढ़ वंश :

- यह बंगाल के क्षेत्र में था।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
- इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधि वृक्ष को कटवाकर इसके जड़ों में आग लगा दिया।
- इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वत: ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।

4. पूर्वी गंग वंश :

- यह उड़िसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
- इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पूरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
- इस वंश के शासक नरसिंह-I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
- इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

काकतिया वंश (तेलंगाना)

- यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- इसके संस्थापक बीटा प्रथम थे।
- इस वंश का अगला शासक रूद्र प्रथम बना। इसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- इस वंश का अगला शासक प्रतापरूद्र देव था, जिसके सामने मल्लिक काफूर ने आक्रमण किया।
- इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन खिलजी के दरबार में भेंट किया।
- इसके बाद यह वंश स्वत: समाप्त हो गया।
- इस वंश पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

यादव वंश

- यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक भिल्लम-V थे।
- इसकी राजधानी देवगिरि थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक सिंहन्न था।
- इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया किन्तु इसकी वीरता को देखकर अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

होयशल वंश

- ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वारसमुद्र (आधुनिक हलेविड) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्मन थे।
- इन्होंने वेल्लूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक वीरवल्लाल तृतीय था। जिसे मल्लिकाफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

कश्मीर का इतिहास

- कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी संस्कृत के कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।
- **राजतरंगिणी :-** यह ऐसा संस्कृत साहित्य है जिसमें क्रमबद्ध तरीके से इतिहास लिखने का पहली बार प्रयास किया गया।
- यह ग्रंथ ऐतिहासिक रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कल्हण ने पक्षपात रहित होकर राजा के गुण और दोषों का वर्णन किया है।
- **इसमें तीन वंशों की जानकारी हैं–**
  - (i) कार्कट वंश
  - (ii) उत्पल वंश
  - (iii) लोहार वंश

(i) कार्कट वंश :-

- इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इसके दरबार में ह्वेनसांग (कश्मीर) आया था।
- इस वंश का शासक तारापिंड सबसे क्रूर शासक था।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक ''ललितादित्य मुक्तापिड'' था। जिसने मालवा के चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
- कश्मीर में सूर्य का प्रसिद्ध मार्तण्ड मन्दिर ललितादित्य द्वारा बनवाया गया था।
- तक्षशिला, राजपूताना, सिंहपुर, उर्शा और पुंच इसी वंश का क्षेत्र था।
- इस वंश का अंतिम शासक जयपिड था।
- दामोदर गुप्त, उद्भट्ट तथा क्षीर नामक विद्वान जयापिड के दरबार में रहा करता था।
- 810 ई. में जयपिंड की मृत्यु हो गई और 9वीं सदी के प्रारंभ में कार्कट वंश समाप्त हो गया।

(ii) उत्पल वंश :-

- कार्कट वंश के बाद कश्मीर पर उत्पल वंश का अधिकार हुआ।
- इस वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन थे। इन्होंने अवन्तिपुर नामक नगर बनवाई।
- रत्नाकार एवं आनंदवर्धन नामक कवि अवन्तिवर्मन के दरबार में रहा करते थे।
- अवन्तिवर्मन का योग्य मंत्री शूर था।
- अवन्तिवर्मन के समय सूय्य नामक अभियंता ने नहरों से सिंचाई का निर्माण करवाया था।
- अवन्तिवर्मन का उत्तराधिकारी शंकरवर्मन ने गुर्जर को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- अवन्तिवर्मन की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी शुगंधा ने शासन की।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- इस वंश में प्रथम महत्वकांक्षिका शासिका रानी दिद्दा थी जो क्षेमगुप्त की पत्नी थी।
- इनकी मृत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की स्थापना कर दी।

(iii) लोहार वंश :

- उत्पल्ल वंश के बाद लोहार वंश आया।
- इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।
- संग्रामराज ने अपने मंत्री तुंग को भट्टिंडा के शाही शासक त्रिलोचनपाल की ओर से महमूद गजनवी से लड़ने के लिए भेजा।
- इस वंश का शासक 'हर्ष' एक योग्य शासक था।
- इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नीरों की उपाधि धारण की।
- हर्ष स्वयं एक कवि था और कई भाषाओं एवं विद्याओं का ज्ञाता भी था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
- इस वंश का अंतिम शासक जयसिंह था।
- इन्हीं के काल में ''राजतरंगिणी' पुस्तक पूर्ण हुई थी।
- इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।
- यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनूल-आबे-दीन' थे।
- इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

वर्मन वंश (कामरूप असम)

- असम का प्राचीन नाम कामरूप था।
- इस वंश का संस्थापक पुष्यवर्मन था। यह समुद्रगुप्त के समकालीन था।
- असम को पहले प्रयागज्योतिषपुर भी कहा जाता था। यह पुष्यपुर की राजधानी थी।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक भूतिवर्मन था।
- स्थितवर्मन ने दो अश्वमेघ यज्ञ करवाया था।
- इस वंश का अंतिम शासक भास्करवर्मन था।
- पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन ने समस्त कामरूप के साथ बंगाल के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया और इसी के साथ कामरूप के वर्मन वंश का अंत हो गया।
- अंत में कामरूप पालवंश का अंग बन गया।

मूर्तिकला तथा मंदिर निर्माण की शैली

मूर्त्ति बनाने की शैली

गंधार शैली | मथुरा शैली | अमरावती शैली

(i) गंधार शैली – इस शैली का विकास कुषाण वंश के प्रमुख शासक कनिष्क के शासन काल में हुआ था।

- सबसे पहले इस शैली में मुर्त्ति मिट्टी, चुना और प्लास्टर को मिलाकर बनाई जाती थी लेकिन इस प्रकार की मुर्त्ति बहुत कमजोर होती थी इसलिए बाद में ये काले और भूरे रंग के पत्थर से बनाए जाने लगे।
- ये मुर्त्तियाँ मुख्य रूप से पश्चिमोत्तर भारत में बनाई जाती थी। जिसका प्रमुख केन्द्र तक्षशीला था।
- इस शैली की 95% मूत्तियाँ महात्मा बुद्ध की बनी थी।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध के बहुत बड़े घुंघराले बाल दिखाए गए हैं।
- इस शैली में महात्मा बुद्ध को बहुत बलशाली, बलिष्ट शरीर (गठिला), योग करते हुए, ध्यान की मुद्रा में और युवा अवस्था में दिखाया गया है।
- इसमें महात्मा बुद्ध के पीछे होलोमंडल या प्रभामंडल सेप दिखाई गई है। कपड़े को दोनों ओर से लपेटकर पुरा शरीर ढका हुआ है।
- इस शैली का उल्लेख वैदिक एवं सांस्कृतिक साहित्य में है। यह कला युनान से प्रभावित है। इसलिए इसे ग्रिको इंडियन कला भी कहा जाता है।
- इस कला में मूर्त्ति बैठी, खड़ी आँखे बंद, योग और ध्यान मुद्रा में बनाई गई है।
- यह शैली अपोलो देवता से प्रभावित है।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

(ii) मथुरा शैली – मथुरा शैली का विकास मुख्यत: उत्तर भारत में हुए थे।

- ☞ मथुरा, वाराणसी और कौशाम्बी इसके प्रमुख केन्द्र थे। इसकी शुरूआत मथुरा से हुई इसलिए इसे मथुरा शैली कहा जाता था।
- ☞ इस शैली में चौड़ा सिना, बालविहिन और नग्न मूत्तियाँ भी थी। ज्यादातर मुत्तियों में बायां हाथा आस्नस्थ है और दाहिने हाथ को अभय मुद्रा (आशिर्वाद) मुद्रा में उठाये हुए हैं और कपड़े बाएं कंधे पर पड़े हुए हैं।
- ☞ इस शैली में तीन धर्म की मूर्त्तियाँ मिलेगी बौद्ध + जैन + हिन्दू। यह शैली पूर्णत: भारतीय शैली थी। इसमें लाल रंग के पत्थर का प्रयोग हुआ है।

(iii) अमरावती शैली – इस शैली का विस्तार मुख्यत: दक्षिण भारत में थी।

- ☞ इस शैली में पूजा और योग को दिखलाकर कहानियों को दिखलाया गया है।
- ☞ इसमें कई मूत्तियाँ एक साथ बनाई गई थी।
- ☞ इस शैली की मूत्तियाँ मुख्यत: सफेद संगमरमर की बनाई जाती थी।
- ☞ इस कला की मूर्त्तियाँ जातक कथाओं की है और इसे चित्रण के माध्यम से बनाया जाता है।
- ☞ ये दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश के अमरावती नामक स्थान पर विकास हुआ। इसलिए इसे अमरावती शैली कहा जाता था।

शैली	जगह	रंग	वंश	धर्म	अवस्था	संकेत
गंधार	पश्चिम भारत	काला	कुषाण	बौद्ध	योग	चिंता
मथुरा	उत्तर भारत	लाल	कुषाण	बौद्ध + जैन + हिन्दू	आशिर्वाद	प्रसन्नता
अमरावती	दक्षिण भारत	सफेद	सातवाहन	बौद्ध	ग्रुप	कहानी

स्थापत्य कला

- ☞ भारत में स्थापत्य कला में मंदिरों के निर्माण की शैली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।
- ☞ भारत में प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण की जो शैली है वह मौर्य काल से प्रारंभ होती है और गुप्त काल में अपन चरम पर होती है।
- ☞ मंदिरों का वर्तमान स्वरूप गुप्त काल की है।

मंदिर निर्माण की शैली

- नागर शैली
- विमानन शैली (द्रविड़ शैली)
- बेशर शैली

(i) नागर शैली – नागर शैली की मंदिर उत्तर भारत में देखने को मिलते हैं।

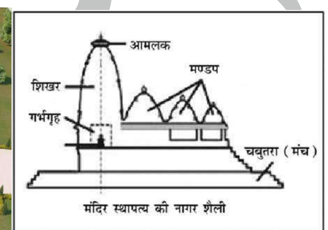

- ☞ यह उत्तर भारत में हिमालय से लेकर विंध्याचल पर्वत तक मिलते हैं।
- ☞ नागर शैली कि मंदिर का जो गुबंद होता है। वह नीचे चौड़ा होता है और जैसे-जैसे ऊपर जाता है पतला होते जाता है। यह गुबंद रेखीय होता है जिसे शिखर कहा जाता था शिखर के ऊपर एक रिंग बना दिया जाता है जिसे आमलक कहा जाता था और आमलक के ऊपर एक कलश रख जाता था और कलश के बगल में एक ध्वज रखा जाता था।
- ☞ इसके शिखर ऊँचे नहीं होते हैं। शिखर के नीचे भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है जहाँ भगवान की मूर्त्ति रखी जाती है उसे गर्भ गृह कहते हैं।
- ☞ पूरे मंदिर का सबसे प्रमुख जगह गर्भ गृह ही होता है।
- ☞ गर्भ गृह में ज्यादा भीड़ न हो इसलिए उसमें कई मंडप बने होते हैं ताकी वहाँ लोग प्रतिक्षा कर सके।
- ☞ गर्भ गृह के दरवाजे पर गंगा और यमुना की मूर्त्ति की मुर्त्ति होती थी।
- ☞ इस शैली की मंदिरो में दो प्रकार की सिढ़ी होती थी शुरूआत की जो सिढ़ि होती थी उसे जगती, चबुतरा अगली सिढ़ि को पिठ कहा जाता था।
- ☞ गर्भ गृह ओर मंडप के बीच खाली जगह नहीं होते थे। गर्भ गृह के अंदर ही पद्रक्षीणा पथ (परिक्रमा) होता था।
- ☞ नागर शैली की मंदिर कभी भी अकेली नहीं होती थी। इसे पांच मंदिर के ग्रुप में बनाया जाता था। इसीलिए इसे पंचायतन शैली कहा जाता था।

- इस मंदिर के चारों ओर बाउंडरी नहीं रहती थी। यहाँ किसी भी प्रकार का तलाब नहीं होता था क्योंकि उत्तर भारत में नदियों की कोई कमी नहीं है और मंदिर में कोई भाव्य गेट नहीं होता है।
- इस शैली की कई विशेषता थी जो उड़िसा में है उसे उड़िया शैली उसकी एक शाखा मध्य प्रदेश में है जो कंदरिया महादेव खजुराहो का मंदिर है।
- एक शाखा गुजरात में भी है जिसे शोलंकी शैली कहते हैं।

(ii) विमानन शैली / द्रवीड़ शैली – द्रविड़ शैली का विकास चोल और पल्लव काल में हुए थे।

- ये मंदिर हमें दक्षीण भारत में देखने को मिलती हैं।
- दक्षिण भारत में पानी की कमी होती थी। इस शैली में वहाँ तलाब होते हैं।
- यह शैली कृष्णा नदी से लेकर पुरी दक्षिण भारत में है। इस शैली में भव्य मेन गेट होते थे। जिसे हमलोग इनटरेस या गोपुरा कहते थे।
- मेन गेट के कारण ही वहाँ चारदिवारी बनी होती थी।
- यह मंदिर भी पंचायतन शैली में ही था।
- मंदिर बीच में रहती थी इस शैली कि मंदिर सिढ़िनुमा होती है। और सिढ़िनुमा को ही विमानन कहा जाता था। इसी कारण इस शैली को विमानन शैली भी कहा जाता था।
- विमानन शैली में मंडप और गर्भ गृह सटा नहीं रहता है। उसमें अंतराल रहता है क्योंकि यही पर परिक्रमा किया जाता है।
- गर्भ गृह के बाहर दरवाजे पर यक्ष और यक्षीणी की मूर्त्ति लगी रहती है।

(iii) बेसर शैली – यह शैली नागर और द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप है।

- यह शैली विध्य से कृष्णा नदी तक मिलता है।
- इसमें खुले प्रदक्षिणा पथ होता है और मण्डप बहुत सुसजित होता है।

कुछ प्रमुख शैली के उदाहरण–

- नागर शैली – मिनाक्षी मंदिर (मदुरै)
- विजयनगर शैली - विट्ठल स्वामी मंदिर (विजय नगर), लोटस महल (हम्पी)
- होयशल शैली–
- पाल शैली -

कुछ प्रमुख मंदिर और उसकी शैली

नागर शैली

भितरगांव मंदिर – कानपुर

दशावतार मंदिर – झांसी

लक्ष्मण मंदिर – सिहपुर

कन्दरिया महादेव मंदिर – खजुराहो (एम.पी.)

लिंगराज मंदिर – भुवनेश्वर (उड़ीसा)

जगन्नाथ मंदिर – पुरी (उड़ीसा)

सूर्यमंदिर – कोणार्क उड़ीसा

द्रविड़ शैली

वृहदेवश्वर मंदिर – तंजावुर

शिवमंदिर – गंगैयकोडचोलपुरम

महावलीपुरम रथ मंदिर – महावलिपुरम

वेसर शैली

डोडा वेसप्पा – दम्बल

बादामी के मन्दिर

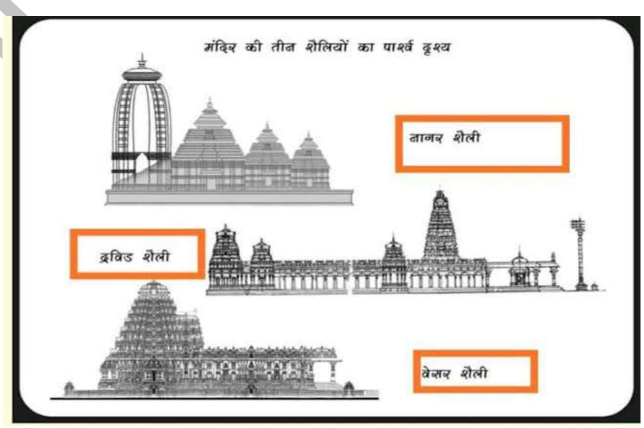

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

राजपूत काल (800ई.-1200ई.)

पूर्वमध्यकाल (800ई.-1200ई.)

- राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक ''पृथ्वीराज रासो'' से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं–

  (i) प्रतिहार

  (ii) परमार

  (iii) चालुक्य

  (iv) चौहाण

  (i) प्रतिहार : पीछे पढ़ चुके हैं।

  (ii) परमार वंश :
- यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- अंतत: इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- इसके संस्थापक मूल राज थे।
- इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलसाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- महमूद गजनवी ने भीम-I के काल मे ही सोमनाथ का मंदिर लूट लिया।
- भीम प्रथम के सेनानायक विमलशाह ने माउंट आबू पर प्रसिद्ध जैन मंदिर (दिलवाड़ा मंदिर) का निर्माण करवाया था।
- इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हरा दिया।
- यह मोहम्मद गोरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- अंत: इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

चौहान वंश

- इस वंश का उदय जंगल देश में हुआ जिसे बाद में सपादलक्ष (सवा लाख गांव)कहा गया। जिसकी राजधानी अहिक्षत्रपुर थी।
- चंदवरदाई के अनुसार इस वंश की उत्पत्ति अग्निकुंड से हुई।
- इस वंश के संस्थापक वासुदेव (सिंह राज) थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक अरूणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रहराज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा है।
- वाक्पतिराज–I ने सर्वप्रथम चौहानों में महाराज की उपाधि धारण की।
- इस वंश के अगले शासक पृथ्वीराज-III (चौहान) थे।
- पृथ्वीराज चौहान को रामपिथैरा भी कहा जाता है।
- पृथ्वीराज–III (चौहान) के पिता सोमेश्वर तथा माता (संरक्षिका) कर्पूरी देवी जो त्रिपुरी के कल्चूरी राजा अचलराज की पुत्री थी।
- पृथ्वीराज तृतीय के दरबार में जयानक, चन्दबरदाई, विश्वरूप, वागीश्वर, जनार्दन, विद्यापति गौड, आशाधार तथा पृथ्वीभट्ट आदि विद्वान रहते थे।
- चन्दबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ की स्थापना किया।
- इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई०) मोहम्मद गोरी को पराजित कर दिया।
- पृथ्वीराज-III (चौहान) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पृथ्वीराज-III (चौहान) विरोधी हो गए।
- जयचंद्र ने मोहम्मद गोरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192 ई०) पृथ्वीराज-III (चौहान) की हत्या कर दी।
- तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक घटना थी।
- पृथ्वीराज तृतीय तराईन के युद्ध में नाटयरम्भा नामक घोड़ा तथा हाथी का नाम रामप्रसाद पर सवार था।
- मोहम्मद गोरी ने 1194 ई० में चंदवार के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गोरी के गुलाम कुतुबद्दीन ऐबक ने दिल्ली तथा अजमेर पर आक्रमण करके चौहानों की सत्ता का अंत कर दिया।

By. Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

One liner Question :–

★ तीनों संगम कितने वर्षों तक चले - **9990 वर्ष**

★ अशोक के अभिलेख में उल्लिखित चार दक्षिण भारतीय शक्तियों में से किस एक की पहचान अभी तक ठीक से नहीं हो पायी है - **सातियपुत्र**

★ संगम काल में ओर किसे कहा जाता था - **जासूसों को**

★ संगम काल में युद्ध से प्राप्त भेंट या लूट को क्या कहा जाता था - **इरइ**

★ संगम साहित्य में वेची शब्द का प्रयोग किस अर्थ में हुआ है - **गो हरण**

★ संगम काल में कर-संग्राहक को क्या कहा जाता था - **वरियार**

★ कुलावानेकन शब्द का उपयोग संगम साहित्य में किस अर्थ में हुआ है - **अनाज व्यापारियों का समूह**

★ संगम काल में ग्राम प्रशासन को क्या कहा जाता था - **अम्बलम**

★ आठवीं सदी में किसने संगम-साहित्य पर अपना भाष्य लिखा - **ईरय्यानार अगजोरुल**

★ संगम-साहित्य के अंतर्गत प्रेमविषयक काव्य-संग्रह को क्या कहते हैं - **अकम**

★ संगम काल में मलैयार, पोरैयार, कुदावार इत्यादि नाम किस शासक शक्ति के लिए मिलता है - **चेर**

★ पुहार बंदरगाह का निर्माण किस चोल शासक ने किया था - **करिकाल**

★ संगम समाज में प्रचलित गंधर्व विवाह को तमिल साहित्य में क्या कहा गया है - **कलावु**

★ प्राचीन काल में दक्षिण भारत के एक प्रमुख तत्व श्रेष्ठ कोटि के रेशम को क्या कहा जाता था - **कलिंग**

★ दक्षिण भारत में मुरुगन देवता को समर्पित महोत्सव को क्या कहा जाता है - **वेल्नाडल**

★ प्राचीन भारत के प्रसिद्ध वासवसमुद्र बंदरगाह नगर को आजकल किस नाम से जाना जाता - **चेन्नई**

★ दक्षिण भारत में किस देवता का मंदिर वजकोट्टम कहलाता था - **इंद्र**

★ कापालिक शैव संन्यासियों की चर्चा किस तमिल ग्रंथ में है - **मणिमेकले**

★ संगम साहित्य में शहर की सड़कों के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है - **दरू**

★ संगम साहित्य में राजा की सभा के लिए किस शब्द का प्रयोग हुआ है - **नालवै**

★ पुहार के व्यापारी कोवलन की कथा का वर्णन किस तमिल महाकाव्य में हैं - **शिलाप्पदिकारम**

★ चेर, चोल एवं पाण्ड्य के शासनाधीन समस्त संगम क्षेत्र को क्या कहते थे - **तमिल्हम**

★ संगम साहित्य के अंतर्गत प्रसिद्ध तमिल व्याकरण ग्रंथ 'तोलकाप्पियम' की रचना किस संग के दौरान की गई थी - **द्वितीय संगम**

★ दक्षिण भारत में किनके राज्य को 'तोण्डईमण्डलम्' कहा जाता था - **चोल राज्य**

★ नवीं शताब्दी ई. में चोल साम्राज्य की नींव डाली गई - **विजयालय द्वारा**

★ वह मंदिर परिसर जिसमें एक भारी-भरकम नंदी की मूर्ति है, जिसे भारत की विशालतम नंदी मूर्ति माना जाता है - **वृहदीश्वर मंदिर**

★ तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर जिस चोल शासक के काल में निर्मित हुआ था, वह था - **राजराज प्रथम के**

★ चोलों का राज्य फैला था - **कोरोमंडल तट, दक्कन के कुछ भाग तक**

★ कावेरीपत्तन, महाबलीपुरम, कांची और तंजौर में से चोलों की राजधानी - **तंजौर**

★ चोल प्रशासन की विशेषता थी-ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता वर दक्षिण भारतीय राज्य जिसमें उत्तम ग्राम प्रशासन था - **चोल**

★ चोलों के अधीन ग्राम प्रशासन के बहुत से ब्यौरे जिन शिलालेखों में हैं, वे हैं - **उत्तर मेरूर में**

★ चोल शासकों के शासनकाल में उद्यान प्रशासन का कार्य देखता था - **टोट्ट वारियम्**

★ चोल काल में निर्मित नटराज की कांस्य प्रतिमाओं में देवाकृति प्रायः - **चतुर्भुज है**

★ दक्षिण भारत के विशेषकर चोल युग के स्थापत्यों की विश्व में श्रेष्ठतम प्रतिमा रचना माना जाता है - **नटराज को**

★ शिव की 'दक्षिणामूर्ति' प्रतिमा उन्हें प्रदर्शित करती हैं - **शिक्षक के रूप में**

★ 72 व्यापारी, चीन में भेजे गए थे - **कुलोत्तुंग के कार्यकाल में**

BY : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ चोल, चेर, पल्लव एवं राष्ट्रकूट में से दक्षिण भारत का वह राजवंश जो अपनी नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध था - **चोल**

★ चोल शासकों में जिसने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' का स्वरूप प्रदान कर दिया, वह था - **राजेंद्र प्रथम**

★ गंगैकोंडचोलपुरम' की स्थापना की थी - **राजेंद्र प्रथम ने**

★ वह चोल शासक जिसे चोल गंगम नामक वृहद् कृत्रिम झील बनवाने का श्रेय दिया जाता है - **राजेंद्र प्रथम**

★ वह चोल राजा जिसने जल सेना प्रारंभ की थी - **राजराज प्रथम**

★ चोल शासक जिसने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की - **राजराज प्रथम**

★ चोल राजाओं में वह जिसने सीलोन (Ceylon) पर पूर्ण विजय प्राप्त की - **राजेंद्र**

★ वह चोल राजा जिसने श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था - कुलोत्तुंग- I

★ प्राचीन भारत का वह महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र जो उस व्यापार मार्ग पर था, जो कल्याण को वेंगी से जोड़ता था - **तगर**

★ चालुक्य वंश का सबसे महान शासक था - **पुलकेशिन-**II

★ चोल, चालुक्य, पाल तथा सेन में से वह वंश जिसके द्वारा प्राय: महिलाओं को प्रशासन में उच्च पद प्रदान किए जाते थे - **चालुक्य**

★ चालुक्यों की राजधानी थी - **वातापी में**

★ संस्कृत के कवि और नाटककार कालिदास का उल्लेख हुआ है - **पुलकेशिन–II के ऐहोल अभिलेख में**

★ प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में प्राप्य 'यवनप्रिय' शब्द द्योतक था - **काली मिर्च का**

★ संगम साहित्य में 'तोलकाप्पियम' एक ग्रंथ हैं - **तमिल व्याकरण का**

★ शिलप्पादिकारम का लेखक था - **इलंगो आडिगल**

★ ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में भारत तथा रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों की सूचना प्राप्त होती है - **अरिकामेडु पुरास्थल की खुदाइयों से**

★ वह बंदरगाह, जो पोडूके नाम से 'दी पेरिप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी' के लेखक को ज्ञात था - **अरिकामेडु**

★ रोमन बस्ती प्राप्त हुई है - **अरिकामेडु से**

★ एम्फोरा जार होता है एक - **लंबा एवं दोनों तरु हत्थेदार जार**

★ कदंब, चेर, चोल तथा पाण्ड्य राजवंशों में वह जिनका उल्लेख संगम साहित्य में नहीं हुआ है - **कदंब**

★ चेर, चोल, पल्लव तथा पाण्ड्य में से वह जो तमिल देश के संगम युग का राजवंश नहीं था - **पल्लव**

★ धार्मिक कविताओं का संकलन 'कुरल' है - **तमिल भाषा में**

★ तमिल ग्रंथ जिसे 'लघुवेद' की संज्ञा दी गई है - **कुरल**

★ तमिल रामायणम या रामावतारम का लेखक था - **कंबन**

★ प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था - **मणिग्रामम्**

★ दक्षिण भारत का प्रसिद्ध 'तक्कोलम का युद्ध' हुआ था - **चोल एवं राष्ट्रकूटों के मध्य**

★ चोल साम्राज्य को अंतत: समाप्त किया - **मलिक काफूर ने**

★ संगम युग में 'उरैयूर' विख्यात था - **सूती वस्त्र के केंद्र के रूप में**

★ पाण्ड्य राज्य की जीवन रेखा थी - **वेंगी नदी**

★ संगम पत्तन जो पश्चिमी तट पर स्थित थे - **नौरा, तोंडी, मुशिरि एवं नेलसंडा**

★ संगम कालीन साहित्य में कोन, को एवं मन्नन प्रयुक्त होते थे - **राजा के लिए**

★ तृतीय संगम हुआ था - **मदुरई में**

★ प्रथम एवं द्वितीय संगम का आयोजन क्रमश: हुआ था - **मदुरई एवं कपाटपुरम (अलैवाई) में**

★ वह ऋषि जिसके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया, उन्हें आर्य बनाया - **अगस्त्य**

★ वह चीनी यात्री जिसने चालुक्यों के शासनकाल में चीन एवं भारत के संबंधों का विवरण दिया है - **मात्वालिन**

★ चालुक्य, राजपूत, गुप्त एवं मौर्य में से वह राजवंश जिसने उत्तर भारत पर शासन नहीं किया है - **चालुक्य**

★ कदंब राजाओं की राजधानी थी - **वनवासी**

★ दक्षिण भारत का वह वंश जिसके राजा ने रोम राज्य में एक दूत 26 ई.पू. में भेजा था - **पाण्ड्य**

★ मीनाक्षी मंदिर स्थित है - **मदुरई में**

★ वेंकटेश्वर मंदिर - **तिरूमाल**

★ महाकाल मंदिर - **उज्जैन**

★ बेलूर मठ - **हावड़ा**

★ कदम्ब वंश की स्थापना की थी - **मयूर शर्मन ने**

★ काकतीय वंश का संस्थापक था - **बीटा प्रथम**

★ काकतीय वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था - **गणपति**

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ रुद्रमा देवी गणपति की पुत्री थी जिसने शासन किया था **-35 वर्षों तक**

★ होयसल वंश की स्थापना की थी - **विष्णुवर्धन ने**

★ होयसल वंश की राजधानी थी - **द्वारसमुद्रम**

★ चेन्ना केशव मंदिर का निर्माण करवाया था- **विष्णुवर्धन ने**

★ बोधिसत्व पदमपाणि का चित्र सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्राय: चित्रित चित्रकारी है, जो **–अजंता में है**

★ किस स्थान पर राष्ट्रकूटों द्वारा एलोरा पहाड़ियों में निर्मित गुफा मंदिर स्थित है **–औरंगाबाद (महाराष्ट्र)**

★ खजुराहो को मातंगेश्वर मंदिर समर्पित है **–शिव को**

★ कौन-सी गुफा 'त्रिमूर्ति' के लिए विख्यात है **–एलिफेंटा**

★ खजुराहो का कंदरिया महादेव मंदिर किसने बनवाया **–चंदेल**

★ एलीफेंटा के प्रसिद्ध शैल को काटकर बनाए गए मंदिरों का श्रेय दिया जाता है **–राष्ट्रकूटों को**

★ किसका शिखर द्रविड़ शैली में बना हुआ है **–ग्वालियर का तेली मंदिर**

★ किस केंद्र में एक सौ से अधिक बौद्ध गुफाएं हैं **–कन्हेरी**

★ खजुराहो के मंदिर संबंधित है **–हिंदू धर्म और जैन धर्म**

★ आबू का जैन मंदिर किससे बना है **–संगमरमर से**

★ एलोरा के प्रसिद्ध शिव मंदिर का निर्माता राष्ट्रकूट नरेश था **–कृष्ण प्रथम**

★ एलीफेंटा की गुफाएं मुख्यत: निम्न धर्म के मतावलंबियों के उपयोग के एिल काटकर बनाई गई थी **–जैन धर्म**

★ एलोरा में गुफाएं और शैल-कृत मंदिर है **–हिंदुओं, बौद्धों और जैनों के**

★ बौद्ध, हिंदू एवं जैन शैलकृत गुहाएं एक साथ विद्यमान हैं **–एलोरा में**

★ शैलकृत स्थापत्य का उदाहरण है **–कैलाश मंदिर, एलोरा**

★ चंदेल राजाओं ने निर्माण किया **–खजुराहो**

★ अजंता एवं एलोरा की गुफाएं किस नगर में स्थित है **–औरंगाबाद**

★ किस वंश के राजाओं ने खजुराहो स्थित मंदिरों का निर्माण करवाया था **–चंदेल**

★ पश्चिमी भारत में प्राचीनतम शैलकृत गुफाएँ कहाँ है **–नासिक, एलोरा एवं अजंता**

★ बौद्ध गुफा मंदिरों के लिए कौन-सा स्थान प्रसिद्ध है **–अजंता**

★ अजंता की कल को किसने प्रश्रय (सहायता) दिया **–वाकाटक**

★ एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण किसने करवाया था **–कृष्णा I**

★ किस धर्म को राष्ट्रकूटों को संरक्षण प्राप्त था **–जैन धर्म**

★ अजंता और एलोरा गुफाएं हैं **–महाराष्ट्र**

★ एलोरा गुफाओं का निर्माण करवाया था **–राष्ट्रकूटों ने**

★ अजंता की गुफाएं किससे संबंधित है **–जातक कथाएँ**

★ 'काला (श्याम) पैगोडा' के नाम से जाना जाता है **–कोणार्क का सूर्य मंदिर**

★ कोणार्क का सूर्य मंदिर किसने बनवाया था **–नरसिंह देव वर्मन**

★ 'ब्लैक पगोडा' कहाँ है **–कोणार्क**

★ मोढेरा का सूर्य मंदिर किस राज्य में स्थित है **–गुजरात**

★ सूर्य मंदिरों कें कौन-सा पाटन, गुजरात में स्थित है**–मोढेरा**

★ लिंगराज मंदिर अवस्थित है **–भुवनेश्वर में**

★ जगन्नाथ मंदिर किस राज्य में है **–उड़ीसा**

★ भुवनेश्वर तथा पुरी के मंदिर किस शैली में निर्मित है **–नागर**

★ उड़ीसा में नष्ट होने से बचे निम्नांकित मंदिरों में सर्वाधिक बड़ा और सबसे ऊंचा मंदिर कौन है **–लिंगराज मंदिर**

★ अंकोरवाट का विष्णु मंदिर कहां स्थित है **–कंबोडिया**

★ बोरोबदूर स्तूप कहाँ स्थित है **–जावा**

★ कौन-से बृहत मंदिर के प्रारंभिक अभिकल्पना तथा निर्माण सर्यूवर्मन II के राज्यकाल के दौरान हुए**–अंकोरवाट मंदिर**

★ द्रविड़ शैली के मंदिरों में 'गोपुरम' से तात्पर्य है **–तोरण के ऊपर बने अलंकृत बहुमंजिला भवन से**

★ किस वंश ने एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण किया था **–राष्ट्रकूट**

★ चट्टानों को काटकर महाबलीपुरम का मंदिर किसके द्वारा बनवाया गया **–पल्लव**

★ महाबलिपुरम् में रथ मंदिरों का निर्माण कराया गया था **–पल्लवों द्वारा**

★ एलोरा के कैलाश मंदिर का निर्माण करवाया था **–राष्ट्रकूटों ने**
★ महाबलिपुरम् का सप्तरथ मंदिर बनवाया गया था **–नरसिंह वर्मन**
★ अंकोरवाट मंदिर समूह किस देश में स्थित है **–कंपूचिया**
★ महाबलीपुरम के रथ मंदिरों का निर्माण किसने करवाया था **–नरसिंह वर्मन I**
★ एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर के निर्माण में कौन-सा शासक वंश संबंद्ध रहा है **–राष्ट्रकूट**
★ भारत के कला और पुरातात्विक इतिहास के संदर्भ में सबसे पहले निर्माण गया था **–धौली स्थित शैलकृत हाथी**
★ सोनगिरी का ऐतिहासिक दिगंबर जैन तीर्थस्थल स्थित है **–मध्य प्रदेश में**
★ दिलवाड़ा जैन मंदिर कहाँ स्थित है **–राजस्थान**
★ सोनगिरी, जहाँ 108 जैन मंदिर बने हुए हैं, किसके सन्निकट स्थित है **–दतिया**
★ प्राचीन नगर तक्षशिला किसके बीच स्थित है **–सिंधु तथा झेलम**
★ दिलवाड़ा जैन मंदिर स्थित है **–माउंट आबू में**
★ दिलवाड़ा जैन मंदिर है **–सिंधु के किनारे**
★ प्रसिद्ध रूपाक्ष मंदिर कहाँ अवस्थित है **–चिदंबरम**
★ नागर, द्रविड़ और बेसर हैं **–भारतीय मंदिर वस्तु की तीन मुख्य शैलियाँ**
★ मामल्लपुरम में रथ स्मारकों के निर्माण के लिए कौन उत्तरदायी थे **–पल्लव**
★ भारत के सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में 'पंचायतन' शब्द किसी निर्दिष्ट करता है **–मंदिर रचना शैली**
★ प्रसिद्ध नैमिषारण्य तीर्थ जनपदों में उपस्थित है **–सीतापुर**
★ कौन-सा रथ मंदिर सबसे छोटा है **–द्रौपदी रथ**
★ काकतीय राज्य में अति महत्वपूर्ण समुद्री पत्त था **–मोटुपलली**
★ किस चोल शासक को चोल गंगम नामक वृहद् कृत्रिम झील बनवाने का श्रेय दिया जाता है **–राजेंद्र**
★ नटराज की प्रसिद्ध कांस्य मूर्ति किस कला का उदाहरण है **–चोल कला का**
★ चोल प्रशासन की विशेषता क्या थी **–ग्राम प्रशासन की स्वायत्तता**
★ चोल शासकों में जिसने बंगाल की खाड़ी को 'चोल झील' का स्वरूप कर दिया, वह कौन था **–राजेन्द्र प्रथम**
★ नवीं शताब्दी ई. में किसके द्वारा चोल साम्राज्य की नींव डाली गई **–विजयालय**
★ रोम बस्ती कहाँ से प्राप्त हुई है **–अरिकामेडु**
★ तंजौर का वृहदीश्वर मंदिर निर्मित हुआ था, शासनकाल में चोल सम्राट **–राजराज प्रथम के**
★ किस मंदिर परिसर में एक भारी-भरकम नंदी की मूर्त्ति है जिसे भारत की विशालतम नंदी मूर्ति मना जाता है **–वृहदीश्वर मंदिर**
★ चोलों की राजधानी थी **–तंजौर**
★ किस दक्षिण भारतीय राज्य में उत्तम ग्राम प्रशासन था **–चोल**
★ चोल काल में निर्मित नटराज की कांस्य प्रतिमाओं में देवाकृति प्राय **–चतुर्भुज है**
★ दक्षिण भारत के विशेषकर चोल युग के स्थापत्यों की विश्व में श्रेष्ठम प्रतिमा-रचना माना जाता है? **–नटराज**
★ चोलों के अधीन ग्राम प्रशासन के बहुत से ब्यौरे जिन शिलालेखों में हैं वे कहाँ हैं **–उत्तर मेरूर**
★ चोलों का राज्य किस क्षेत्र में फैला था **–कोरमंडल तट, दक्कन के कुछ भाग**
★ चोल शासकों के शासनकाल में कौन-सा वारियम् उद्यान प्रशासन का कार्य देखता था **–टोट्ट वारियम्**
★ कुशल ग्रामीण प्रशासन के लिए प्रसिद्ध राजवंश था **–चोल**
★ चोले शासकों के समय में बनी हुई प्रतिमाओं में सबसे अधिक विख्यात हुई **–नटराज शिव की कांसे की प्रतिमाएँ**
★ शिवा की 'दक्षिणामूर्ति' प्रतिमा उन्हें किस रूप में प्रदर्शित करती है **–शिक्षक**
★ चोल शासक का नाम बताइये जिसने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की **–राजराज प्रथम**
★ राजवंशों में से किसके शासक अपने शासनकाल में ही अपना उत्तराधिकारी धोषित कर देते थे **–चोल**
★ 72 व्यापारी, चीन में किसके कार्यकाल में भेजे गए थे **–कुलोत्तुंग I**
★ दक्षिण भारत का कौन-सा राजवंश अपनी नौसैनिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध था **–चोल**
★ 'गंगैकोंडचोलपुरम' की स्थापना किसने की थी **–राजेंद्र I**
★ किस चोल राजा ने जल सेना प्रारंभ की थी**–राजराज प्रथम**
★ चोल राजाओं के किस एक ने सीलोन (Ceylon) पर विजय प्राप्त की थी **–राजेन्द्र I**
★ वह चोल राजा कौन था जिसने श्रीलंका को पूर्व स्वतंत्रता दी और सिंहल राजकुमार के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया था **–कुलोत्तुंग I**
★ प्राचीन भारत का कौन-सा महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र उस व्यापार मार्ग पर था जो कल्याण को वेंगी से जोड़ता था **–तगर**
★ चालुक्य वंश का सबसे महान शासक कौन था **–पुलकेशिन द्वितीय**

★ प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में प्राप्य 'यवनप्रिय' शब्द द्योतक था **–काली मिर्च का**

★ किस वंश द्वारा प्राय: महिलाओं को प्रशासन में उच्च पद प्रदान किए जाते थे **–चालुक्य**

★ चालुक्यों की राजधानी कहाँ थी **–वातापी**

★ कवि कालिदास के नाम पर उल्लेख किसमें हुए है **–ऐहोल के उत्कीर्ण लेख में**

★ संस्कृत के कवि और नाटककार कालिदास का उल्लेख हुआ है **–पुलेकिशन II के ऐहोल अभिलेख में**

★ तोल्काप्पियम ग्रंथ संबंधित है **–व्याकरण और काव्य से**

★ संगम साहित्य में 'तोलकाप्पियम' एक ग्रंथ है **–तमिल व्याकरण का**

★ शिलप्पादिकारम का लेखक था **–इलंगो**

★ ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों में भारत तथा रोम के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंधों की सूचना किस पुरास्थल की खुदाइयों से प्राप्त होती है **–अरिकामेडु**

★ एम्फोरा जार होता है एक **–लंबा एवं दोनां तरफ हत्थेदार जार**

★ कौन-सा बंदरगाह पोडुके नाम से 'दी पेरिप्लस ऑफ दी इरिथ्रियन सी' के लेखक को ज्ञात था **–अरिकामेडु**

★ धार्मिक कविताओं को संकलन 'कुरल' किस भाषा में है **–तमिल**

★ तमिल ग्रंथों में किसे 'लघुवेद' की संज्ञा दी गई है **–कुरल**

★ तमिल रामायण या रामावतारम का लेखक कौन था **–कंबन**

★ मीनराक्षी मंदिर स्थित है **–मदुरई में**

★ प्राचीन भारत में व्यापारियों का निगम था **–मणिग्रामम्**

★ दक्षिण भारत का प्रसिद्ध 'तक्कोलम का युद्ध' हुआ था **–चोल एवं राष्ट्रकूटों के मध्य**

★ संगम युग में 'उरैयूर' किसलिए विख्यात था **–कपास के व्यापार का महत्वपूर्ण केंद्र**

★ पाण्ड्य राज्य की जीवन रेखा कौन-सी नदी थी **–वेंगी**

★ तृतीय संगम हुआ था **–मदुरई में**

★ किस ऋषि के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया, उन्हें आर्य बनाया? **–अगस्त्य**

★ किस चीनी यात्री ने चालुक्यों के शासनकाल में चीन एवं भारत के संबंधों का विवरण दिया है **–मात्वालिन**

★ चोल साम्राज्य को अंतत: किसने समाप्त किया **–मलिक कफूर ने**

★ दक्षिण भारत के किस वंश के राजा ने रोम राज्य में एक दूत 26 ई.पू. भेजा था **–पाण्ड्य**

★ संगमकालीन साहित्य में कोन, को एंव मन्नन किसके लिए प्रयुक्त होते थे **–राजा**

★ मीनाक्षी मंदिर कहाँ अवस्थित है **–मदुरई**

★ कदंब राजाओं की राजधानी थी **–वनवासी**

★ कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी किससे संबंधित है **–कश्मीर के इतिहास से**

★ 'नागानंद' 'रत्नावली' एवं 'प्रयिदर्शिका' के लेखक थे **–हर्षवर्धन**

★ दशकुमारचरित किसने लिखा **–दंडी ने**

★ 'अष्टाध्यायी' किसके द्वारा लिखी गई है **–पाणिनि**

★ 'कुमारसंभव' महाकाव्य किस कवि ने लिखा **–कालिदास**

★ दशकुमारचरितम के रचनाकार थे **–दंडिन**

★ 'चरक संहिता' नामक पुस्तक किस विषय से संबंधित है **–चिकित्सा**

★ मुद्राराखस का लेखक निम्न में से कौन है **–विशाखादत्त**

★ वराहमिहिर की पंचसिद्धान्तिका आधारित है **–यूनानी ज्योतिर्विधा पर**

★ 'इतिहास के पिता' की पदवी सही अर्थों में किससे सबंधित है **–हेरोडोटस**

★ 'मिलिंदपन्हो' **–पाली ग्रंथ है**

★ बौद्ध ग्रंथ 'मिलिंदपन्हो' किस हिन्द-यवन शासक पर प्रकाश डालता है **–मिनेंडर**

★ 'राजतरंगिणी' के लेखक कल्हण के समय शासक था **–जयसिंह**

★ कल्हण कृत राजतरंगिणी में कुल तरंग है **–आठ**

★ कल्हण की राजतरंगिणी को किसने आगे बढ़ाया **–जोनराज एवं श्रीवर**

★ 'सौंदरानंद' किसकी रचना है **–अश्वघोष**

★ चार ग्रंथों में से कौन-सा विश्वकोषीय ग्रंथ है**–वृहतसंहिता**

★ 'मिलिंदपन्हो' राजा मिलिंद तथा एक बौद्ध भिक्षु के मध्य संवाद रूप में हैं वह भिक्षु थे **–नागसेन**

★ कालिदास द्वारा रचित 'कालविकाग्निमित्रम' नाटक का नायक था **–अग्निमित्र**

★ 'स्वप्नवासवदत्ता' के लेखक है **–भास**

★ 'गीता गोविंद' काव्य के रचयिता कौन है **–जयदेव**

★ गीत गोविंद के गीतकार जयदेव किसकी सभा को अलंकृत किरते थे **–लक्ष्मणसेन**

★ 'तुम्हारा अधिकार कर्म पर है, फल की प्राप्ति पर नहीं', यह निम्न में से किस ग्रंथ में कहा गया है **–गीता**

★ 'जो यहाँ है वह अन्यत्र भी है, जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है' यह निम्न में से किस ग्रंथ में कहा गया है **–महाभारत**

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ प्राचीन भारत में निम्नलिखित पुस्तकों में से किस एक में शुंग्र राजवंश के संस्थापक के पुत्र की प्रेम कहानी है **–मालिविकाग्निमित्रम**
★ 'शाकुंतलम' किसने लिखा है **–कालिदास**
★ प्राचीन भारत का वह ग्रंथ जिसका 15 भारतीय एवं चालीस विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ **–पंचतंत्र**
★ किसे भारत प्रथम विधि-निर्माता माना जाता है **–मनु को**
★ सबसे प्राचीन वाद्ययंत्र है **–वीणा**
★ बीजगणित के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विशेष रूप से जाना जाता है **–भास्कर**
★ आर्यभट्ट थे **–भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री**
★ किस भारतीय गणितज्ञ ने दशमलव स्थानिय मान की खोज की थी **–आर्यभट्ट ने**
★ 'मत्त विलास प्रहसन' का लेखक कौन था **–महेंद्रवर्मन**
★ 'मनुस्मृति' मुख्यतया संबंधित है **–समाज-व्यवस्था से**
★ प्राचीन काल के महान विधि-निर्माता थे **–मनु**
★ शून्य का आविष्कार किया था **–किसी अज्ञात भारतीय ने**
★ गणित का पुस्तक 'लीलावती' के लेखक थे **–भास्कराचार्य**
★ 'पंचतंत्र' मूल रूप से लिखी गयी **–विष्णु शर्मा द्वारा**
★ कल्हण की पुस्तक का नाम क्या है **–राजतरंगिणी**
★ हम्मीर महाकाव्य में चौहानों को बताया गया है **–सूर्यवंशी**
★ विक्रमशिला नामक प्राचीन विश्वविद्यालय की स्थापना बंगाल के किस शासक ने की **–धर्मपाल**
★ पुंड्रवर्धन भुक्ति अवस्थित थी **–उत्तर बंगाल में**
★ विक्रमशिला विश्वविद्यालय के संस्थापक थे **–धर्मपाल**
★ विक्रमशिला विश्वविद्यालय किस राज्य में अवस्थित था **–बिहार**
★ कौन-सा शासक ''पृथ्वीराज चौहान'' के नाम से प्रसिद्ध है **–पृथ्वीराज तृतीय**
★ 'पृथ्वीरजा विजय' का लेखक कौन है **–जयानक**
★ गोविंदचंद्र गहड़वाल की एक रानी कुमारदेवी ने धर्मचक्र-जन विहार कहाँ बनवाया था **–सारनाथ**
★ किसने राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव रखी **–दंतिदुर्ग**
★ आल्हा-ऊदल संबंधित थ **–महोबा से**
★ 'पृथ्वीराज रासो' के लेखक हैं **–चंदबरदाई**
★ विक्रमशिला महाविहार की स्थापना किस वंश के शासक द्वारा गरवाई गयी थी **–पाल वंश**
★ ताम्रपत्र लेख दर्शाते हैं कि प्राचीनकाल में बिहार के राजाओं का संपर्क था **–जावा-सुमात्रा से**
★ प्राचीन भारत के एक महान शिक्षा केंद्र विक्रमशिला महाविहार की स्थापना की थी **–धर्मपाल ने**
★ किसने 'हिरण्य-गर्भ' धार्मिक कार्य कराया था **–दंतिदुर्ग**
★ राजपूत वंशों में से किसने, आठवीं शताब्दी में, दिलिका (दहेली) शहर की स्थापना की थी **–तोमरवंश**
★ पाल वंश का संस्थापक कौन था **–गोपाल**
★ किसने सोमपुर महाविहार का निर्माण करवाया था **–धर्मपाल**
★ उस पाल शासक का नाम बताइए जिसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय स्थापित किया **–धर्मपाल**
★ कौन अपने पिता के अभियानों के क्रम में सैनिक छावनी में पैदा हुआ था **–अमोघवर्ष राष्ट्रकूट**
★ महानतम प्रतिहार राजा था **–मिहिरभोज**
★ महान जैन विद्वान हेमचंद्र, किसकी सभा को अलंकृत करते थे **–कुमारपाल**
★ किसे एक नया संवत चलाने का यश प्राप्त है **–लक्ष्मणसेन**
★ लक्ष्मण संवत् का प्रारंभ किस वंश द्वारा यिका गया था **–सेनों द्वारा**
★ महान संस्कृत कवि एवं नाटककार राजशेखर किसके दरबार से संबंधित था **–महेन्द्रपाल**
★ किसे 'नागर महोदय श्री' के नाम से जाना जाता था **–कन्नौज**
★ महोदया किसका पुराना नाम है **–कन्नौज**
★ गुर्जन-प्रतिहार वंश की स्थापना की थी **–नागभट्ट प्रथम**
★ किसने खंभात में तोड़ी गई मस्जिद के पुनर्निर्माण के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की थी **–जयसिंह सिद्धराज**
★ गौडवहो के रचयिता थे **–वाक्पति**
★ राजा भोज ने शासन किया **–धार पर**
★ किसने काल्पनिक वैज्ञानिक उपकरणों पर पुस्तक लिखी है **–भोज**
★ धंगदेव किस वंश का शासक था **–जेलक मुक्ति के चंदेल**
★ मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में शब्द 'अरघट्टा' (Araghatta) किसे निरूपित करता है **–भूमि की सिंचाई के लिए प्रयुक्त जलचक्र (वाटर ह्वील)**
★ 'परमार वंश' का संस्थापक कौन था **–कनकपाल**
★ 'भोजशाला मंदिर' की अधिष्ठायत्री देवी हैं **–भगवती सरस्वती**

By . Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)